हनुमान जी स्तुति मंत्र

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहम्
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् |
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशम्
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ||

|| Shree Hanuman Aarti ||
|| श्री हनुमान आरती ||

आरती कीजै हनुमानलला की, दुष्टदलन रघुनाथ कला की।
जाके बल से गिरिवर कांपे, रोग दोष जाके निकट न झांपै।
अंजनिपुत्र महा बलदायी, संतन के प्रभु सदा सहाई।
दे बीरा रघुनाथ पठाये, लंका जारि सिया सुधि लाये।
लंका-सो कोट समुद्र-सी खाई, जात पवनसुत बार न लाई।
लंका जारि असुर संहारे, सियारामजी के काज संवारे।
लक्ष्मण मूर्छित परे सकारे, आनि संजीवन प्रान उबारे।
पैठि पताल तोरि जम-कारे, अहिरावन की भुजा उखारे।
बाएं भुजा असुरदल मारे, दहिने भुजा सन्तजन तारे।
सुर नर मुनि आरती उतारे, जय जय जय हनुमान उचारे।
कंचन थार कपूर लौ छाई, आरति करत अंजना माई।
जो हनुमानजी की आरति गावै, बसि बैकुण्ठ परम पद पावै।
लंका विध्वंश किये रघुराई। तुलसीदास स्वामी किर्ती गाई ॥
आरती किजे हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥

Note:अगर आप पूजा के समय सिर्फ हनुमान जी की आरती द्वारा ही उनका स्मरण करते है तो आरती से पहले नीचे दिए गये स्तुति मंत्र द्वारा उनका आव्हान अवश्य किया जाना चाहिए|